पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता – मॉड्यूल पाँच – होशे का परिचय – पृष्ठभूमि

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपके विचार से आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. इस्राएल और यहूदा के अगुवे अपने लोगों के सामूहिक पापों के लिए उत्तरदाई थे। इससे आज कलीसिया में अगुवों के उत्तरदायित्व के बारे में क्या पता चलता है? परमेश्‍वर के लोगों के अगुवों के रूप में, क्या यह अतिरिक्त ज़िम्मेदारी आपको परेशान करती है? क्यों या क्यों नहीं?
3. स्वर्गीय न्यायकक्ष में परमेश्वर के मुकद्दमें हमें इस बारे में क्या बताते हैं कि परमेश्वर कैसे न्याय करता है? आज आपकी संस्कृति की कानून व्यवस्था न्याय के इन मानकों से कैसे तुलना करती है?
4. भविष्यद्वक्ता होशे का समय इस्राएल और यहूदा में आत्मिक अविश्वास का समय था। आज पूरे संसार में कलीसिया की आत्मिक स्थिति का वर्णन आप कैसे करेंगे?
5. इस्राएल और यहूदा के पापपूर्ण कार्यों के कारण ही उन्हें परमेश्‍वर की ओर से कड़ा दंड मिला। परमेश्‍वर प्रेमपूर्ण होते हुए भी अपने लोगों के विनाश की अनुमति कैसे दे सकता है?
6. क्या यह बात आपको सही लगती है कि परमेश्‍वर ने अपने लोगों को दंड देने के लिए एक क्रूर और दुष्ट मूर्तिपूजक जाति का इस्तेमाल किया?
7. आपके विचार से परमेश्‍वर ने अपने लोगों से बातचीत करने के लिए सजीव दृष्टान्तों (जैसे, होशे का गोमेर से विवाह और उनके बच्चों के नाम) का क्यों प्रयोग किया? आज हम ऐसे किन तरीकों से बातचीत कर सकते हैं जो इन जीवंत दृष्टान्तों के अनुरूप हों?
8. होशे के वृत्तांत से हम जानते हैं कि परमेश्‍वर अपने लोगों पर दंड भेजने से पहले उन्हें बार-बार चेतावनी देता है। यह आपको परमेश्‍वर के चरित्र के बारे में क्या बताता है?
9. मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के परिणामस्वरूप परमेश्वर की निर्दोषता की वैधानिक घोषणा से आज प्रत्येक मसीही को कैसे लाभ प्राप्त होता है?

**समीक्षा कथन :** इस्राएल और यहूदा के लिए एक भविष्यद्वक्ता के रूप में इस सेवकाई के अतिरिक्त, होशे ने एक पुस्तक भी लिखी जिसमें इस्राएल में की गई उसकी कुछ भविष्यवाणियाँ शामिल थीं। उन्होंने इसे 722 ईसा पूर्व में सामरिया के पतन के बाद लिखा था और इसे यहूदा के राजा हिजकिय्याह और उसके न्यायालय के बुद्धिमान लोगों को पहुँचाया। होशे का उद्देश्य था कि वह हिजकिय्याह और यहूदा के अन्य अगुवों को अनुसरण करने के लिए बुद्धि का एक मार्ग बताए — जो बुद्धि उसने होशे की पहले की सेवकाई में पाई थी — जब उन्होंने 701 ईसा पूर्व में अश्शूर के आक्रमण का सामना किया।

**विषय का अध्ययन 1 :** आरंभ से ही, हिजकिय्याह ने यहूदा में कई सुधार किए और यहूदा को दृढ़ किया, इसलिए जब अश्शूर का नया राजा सन्हेरीब राजगद्दी पर बैठा तो उसने उसे कर देने से इनकार कर दिया। परंतु जब अश्शूर के प्रतिशोध का खतरा बढ़ता गया, तो हिजकिय्याह परमेश्वर पर निर्भर होने से चूक गया। इसकी अपेक्षा उसने मिस्र और मिस्र के देवताओं के साथ गठजोड़ पर भरोसा करने के द्वारा सुरक्षा पाने का प्रयास किया। लेकिन उसके प्रयास व्यर्थ हो गए क्योंकि अश्शूर ने यहूदा पर आक्रमण कर दिया, उसके कई नगरों को नष्ट कर दिया और यरूशलेम को घेर लिया। यही वह समय था जब हिजकिय्याह ने यहोवा से प्रार्थना की, और यहोवा ने उसे सुना और यरूशलेम को चमत्कारिक रूप से बचाया : सन्हेरीब की 1,85,000 पुरुषों की पूरी सेना को रात के समय यहोवा ने नष्ट कर दिया।

**विषय का अध्ययन 2 :** इस चमत्कारिक छुटकारे के बावजूद भी, हिजकिय्याह को अश्शूर की ओर से और अधिक आक्रमण का डर था। परंतु यहोवा पर भरोसा रखने के बजाय, उसने तेज़ी से शक्तिशाली होते हुए बेबीलोन के साथ गठबंधन कर लिया। यह यहूदा के अंत की शुरुआत थी क्योंकि बेबीलोन अंततः यहूदा के लोगों को बंधुआई में ले गया। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा था कि ऐसा होगा।

**विषय का अध्ययन : 3**  जब हिजकिय्याह ने भविष्य में बंधुआई की यह भविष्यवाणी सुनी, तो मन फिराने के बजाय उसने राहत महसूस की कि कम से कम वह बंधुआई भविष्य में आएगी और इसका उस पर व्यक्तिगत रूप से कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

मनन के प्रश्न :

1. परमेश्वर ने बहुत ही चमत्कारिक रूप से हिजकिय्याह और यरूशलेम को अश्शूर से बचाया। हिजकिय्याह के डर पर चर्चा करें और यह आपके डरों से कैसे संबंधित है। खतरों का सामना करते समय आपके डर आपको प्रभु पर भरोसा करने से कैसे रोक सकते हैं? उदाहरण दीजिए।
2. आपके विचार से ऐसे चमत्कारिक छुटकारे पर आपने कैसे प्रत्युत्तर दिया होता? अपने उत्तर को स्पष्ट करें।
3. इस तथ्य पर चर्चा करें कि यरूशलेम का यह छुटकारा यीशु के क्रूस पर मरने, मृतकों में से जी उठने, और हमारे सबसे बड़े शत्रुओं — पाप, मृत्यु और दुष्ट — पर विजय प्राप्त करने के द्वारा अपने लोगों के छुटकारे का पूर्वाभास है। जब आप पहली घटना को दूसरी घटना का पूर्वाभास मानते हैं तो आपको कैसा महसूस होता है?
4. आपने इस छुटकारे पर कैसे प्रत्युत्तर दिया है जो हिजकिय्याह को मिले छुटकारे से भी बड़ा है? उदाहरण दीजिए।

दिए जानेवाले कार्य :

* उन डरों को लिखें जिनका आप अक्सर अनुभव करते हैं। दूसरे कॉलम में, विभिन्न परिस्थितियों के कारण आपके अंदर उत्पन्न होने वाले डर के स्तर को लिखें (1-10 के पैमाने पर)। तीसरे कॉलम में, डर के कारण उत्पन्न होने वाली उस परीक्षा का सामना करने की अपनी विशिष्ट क्षमता को लिखें, जो प्रभु के अलावा किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करती है। प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए डर का सामना करने में सहायता करे।
* अपने क्षेत्र के किसी पास्टर से निम्नलिखित प्रश्न पूछें : इस संस्कृति या शहर में लोग किन मुख्य डरों का सामना करते हैं? आप उन्हें इन डरों का सामना करने में कैसे सहायता करते हैं? वे इस सहायता के प्रति कैसे प्रत्युत्तर देते हैं? उसके उत्तरों को लिखें और भय का सामना करने के विषय पर 2 पृष्ठ का एक लेख लिखें जो उसके उत्तरों, आपके अनुभव और इस अध्याय पर आधारित हो।